विश्वास, ललक और समझ

क्रिस्मस २०२१ के सम्मान में सिद्धयोग सत्संग

आत्मीय पाठक,

आपको खुशियों से भरे पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ!

पर्वों का यह समय हमेशा से ही मेरे सबसे पसन्दीदा अवसरों में से एक रहा है। यह समय मुझे पाइन और सदाबहार वृक्षों की महक की ताज़गी से भर देता है; यह मुझे घण्टियों और कैरल्स् [क्रिस्मस के दौरान गाए जाने वाले गीत] की ध्वनियों की गूँज की और गरम-गरम हॉट चॉकलेट की मिठास की याद दिलाता है। जो बात मुझे सबसे अच्छी लगती है वह यह है कि इस समय विश्वभर के लोग एकत्रित होकर एक महात्मा के जन्म का उत्सव मनाते हैं, भगवान के प्रति अपना सम्मान व अपनी कृतज्ञता अर्पित करते हैं।

मेरा यह अनुभव है कि क्रिस्मस का पर्व और इस दौरान विश्व के अनेक भागों में जो सर्दी का मौसम होता है वह, भौतिक और आध्यात्मिक, दोनों ही प्रकार के स्नेह व सौहार्द को पाने की ललक को प्रकट करता है। हर बार जब पर्वों के इस मौसम का आगमन होता है, मैं देखती हूँ कि सड़कें चमकदार रोशनी से जगमगा रही हैं, और मेरे पास से गुज़रने वाले लगभग हर एक व्यक्ति के चेहरे पर एक प्यारभरी, सौहार्दपूर्ण मुस्कान खेल रही है, और तब मैं एक बच्चे जैसे हर्ष को महसूस कर पुलकित हो जाती हूँ। प्रेम की लहरों पर लहरें मुझे सराबोर कर देती हैं। भगवान के लिए प्रेम, अपनी श्रीगुरु के लिए प्रेम, मेरे आस-पास सभी के लिए प्रेम।

अकसर मेरी इच्छा होती है कि मैं इस भावना में और भी गहरे उतरूँ, कि मैं अपनी आत्मा को और भी बेहतर रूप से समझूँ ताकि प्रेम और एकत्व का यह भाव मेरे जीवन में एक अनवरत अनुभव बन जाए। श्रीगुरुमाई की सिखावनियों के अपने अध्ययन से मैंने सीखा है कि यह प्रेम जो कि त्यौहारों पर विशेषरूप से विद्यमान प्रतीत होता है, वह तो हमारे लिए सदैव उपलब्ध है।

यह एक कारण है कि क्यों मैं सिद्धयोग सत्संग में भाग लेने के लिए इतनी उत्सुक होती हूँ; सत्संग के पावन वातावरण में हमें अपने आन्तरिक अन्वेषण के लिए सम्बल मिलता है। और इसीलिए मुझे आपको यह बताते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है कि हमारे पास क्रिस्मस के सम्मान में सिद्धयोग सत्संग में भाग लेने का सुअवसर है।

इस सत्संग का शीर्षक है :

विश्वास, ललक और समझ

यह सत्संग मंगलवार, २१ दिसम्बर २०२१ की शाम से लेकर शुक्रवार, ३१ दिसम्बर, २०२१ तक सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर उपलब्ध रहेगा। इसमें निम्नलिखित तत्त्व शामिल होंगे :

- आरती गाकर पूजा अर्पित करना
- भगवान के विषय में सिखावनियाँ व कहानियाँ सुनना
- भगवान की स्तुति में नामसंकीर्तन करना और सिद्धयोग ध्यान का अभ्यास करना

सत्संग के दौरान किसी भी समय यदि आप अवकाश लेना चाहें तो वीडिओ पर "pause" [पॉज़] बटन पर क्लिक करके आप अवकाश ले सकते हैं, और फिर जब आप तैयार हों तो पुनः सत्संग में लौट सकते हैं।

सिद्धयोग सत्संगों के बारे में जो बात मुझे अच्छी लगती है वह यह है कि इनमें हरेक के लिए कुछ न कुछ ज़रूर होता है। अपनी-अपनी खोज में, अपनी साधना में, अपनी प्राप्ति में, हम सब भिन्न-भिन्न पड़ाव पर हैं; अपनी श्रीगुरु के साथ हमारा अपना एक अनोखा सम्बन्ध है और हममें से हर एक के लिए इस सम्बन्ध का एक अपना ही स्वरूप है। फिर भी, सिद्धयोग सत्संग में हममें से हर एक को हमारा अपना एक रूपान्तरणकारी अनुभव होता ही है। सत्संग तो सभी के लिए वही होता है, फिर भी सत्संग में जो दिव्य जादू घटित होता है, वह हर व्यक्ति के लिए अनूठा होता है।

मैं सिद्धयोग पथ का अनुसरण करते हुए बड़ी हुई हूँ और अपने पूरे जीवन में मैंने जिन सत्संगों में भाग लिया है, उनमें मैंने यह स्वयं प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया है। मेरी स्मृति में ऐसी अनेकानेक मीठी यादें हैं जब मैंने सत्संग के समापन पर ध्यान-कक्ष से बाहर आकर दूसरे लोगों से पूछा हो कि उनका अनुभव कैसा रहा। हालाँकि सभी ने उसी सत्संग में भाग लिया होता था, फिर भी निस्सन्देह, हर व्यक्ति अपनी-अपनी एक विशिष्ट व निराली अनुभूति या अन्तर-समझ बताता। किसी व्यक्ति को सत्संग में एक ऐसी सिखावनी प्राप्त हुई होती जिसने उस व्यक्ति को गहराई तक प्रभावित किया होता। अन्य किसी व्यक्ति के लिए ध्यान का अभ्यास अत्यन्त बोधप्रद होता, यहाँ तक कि यह उसे इन्द्रियातीत अवस्था में ले जाता और उसे अपनी आत्मा की एक झलक दिखलाता। अन्य किसी के लिए नामसंकीर्तन विशेषरूप से उल्लासमय होता, हारमोनियम से निकलने वाले उत्कण्ठाभरे स्वर और भक्तिभाव से सिक्त लोगों की आवाज़ें उसके अन्दर गुंजायमान हो रही होतीं।

जब भी मैं सत्संग में भाग लेने के लिए तैयारी करती हूँ, मेरा हृदय उत्सुकता से धड़कने लगता है, यह विस्मय से भर जाता है कि कौन-कौन-से नए अनुभव व नई अन्तर्दृष्टियाँ उभरेंगी जिन्हें मैं अपनी साधना में लागू कर सकूँगी। सिद्धयोग पथ पर इस वर्ष क्रिस्मस के उत्सव के बारे में सोचकर मेरे अन्दर यही भाव उमड़ रहा है। मैं बड़ी आतुरता से प्रतीक्षा कर रही हूँ कि मैं आप सभी के साथ इस सत्संग में भाग लूँ; हम सब एक-साथ मिलकर इस पर्व का सम्मान करेंगे और जिसे मैं सर्वोत्कृष्ट तरीक़ा मानती हूँ, उस तरीक़े से हम भगवान की उपस्थिति का आवाहन करेंगे; और वह तरीक़ा है : सत्संग में भाग लेना।

आदर सहित,
वनिता बोरवणकर

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।